बेगमपुर के बादशाहों के ४ स्तम्भ

आज जैसे ही मैं बाबा के पास पहुँची तो सामने बाबा खड़े थे और हम आगे बढ़ रही थी। बाबा दूर से मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि में ऐसे लग रहा था जैसे बाबा कह रहे हैं – ''आओ बच्ची, आओ बच्ची।'' तो जब मैं थोड़ा और नज़दीक पहुँची तो बाबा ने कहा – ''आओ मेरे मीठे बच्चे, आओ मेरे प्यारे बच्चे''... ऐसे कहते बाबा ने ऐसे बाँहे की जैसे बाँहे पसारकर (फैलाकर) कह रहे हैं - आओ बच्चे, आओ बच्चे...इतने में मैंने देखा मेरे पीछे ही आप सब बहनों की बड़ी लाइनें थी और सभी को जैसे बाबा बाँहों में समाते जा रहे थे। समाने के बाद सबका यह लाइट का आकार खत्म होता गया और सभी चमकती हुई मणी बन गई। वह तीन प्रकार की मणियाँ थीं जो तीन स्थानों पर समाती गई। एक - बाबा के सिर पर लाइट का ताज था, उस ताज़ में कुछ मणियाँ चमकने लगी। और कुछ मणियां बाबा के मस्तक में त्रिशूल के मुआफ़िक समा गई। बाकी सभी बाबा के गले में माला के रूप में समा गई। वह तो मणियों की दो तीन मालायें बन गई। तो आप सोचो उस समय बाबा कितना शोभनिक, प्यारा चमकता हुआ नज़र आ रहा होगा और मणियों की इतनी चमक कितनी अच्छी लग रही होगी। फिर बाबा ने कहा देखो, यह मणियां कितना चमक रही हैं क्योंकि इन मणियों द्वारा ही बाबा को विश्व-परिवर्तन करना है। तो सारे विश्व के आत्माओं की नज़र इन चमकती हुई मणियों द्वारा बाप के ऊपर जायेगी। फिर यह सीन भी पूरी हो गई।

उसके बाद बाबा ने कहा कि यह ग्रुप जो है – **यह है बाबा को प्रत्यक्ष करने वाला ग्रुप, ''प्रत्यक्षता ग्रुप''**। फिर बाबा ने एक दूसरा दृश्य दिखाया। वह दृश्य भी बहुत विचित्र था, एक छोटा ग्रुप गोल सर्किल में था और सभी के हाथ आपस में ऐसे मिले हुए थे जो लग रहा था जैसे कोई कमल के पुष्प की बन्द कली होती है, तो सभी के हाथ ऐसे थे जो उसमें ऐसे नज़र आ रहा था जैसे अन्दर मुखड़ी बन्द होती है। उस सर्किल के नीचे बहुत से लोग खड़े थे - सभी की दृष्टि ऊपर की ओर थी। जैसे सभी नीचे से ऊपर की ओर कोई

चीज़ देख रहे हों। फिर सर्किल में जो खड़े थे उन्हें बाबा ने दृष्टि दी तो कमल का पुष्प जैसे खिल जाता है, ऐसे सभी के हाथ खुल गये और उसके बीच से लाइट में ऐसे धीरे-धीरे जैसे शिवबाबा निकला और एकदम ऊपर चला गया, जैसे सूर्य आकाश में ऊपर होता है और सभी ऊपर देखते हैं। ऐसे सूर्य के मुआफ़िक शिवबाबा ऊपर चमकने लगा और सबकी दृष्टि शिवबाबा के तरफ गई। सभी के मुख से जैसे निकला - वाह! वाह! वाह! जैसे झण्डा खुलता है तो फूल बरसते हैं, ऐसे सबके मुख से यह आवाज़ आ रहा था - जैसे वाह! वाह! की वर्षा हो रही है। फिर कुछ समय के बाद जैसे वह लोग जो पहले वाह! वाह! कह रहे थे, उसमें से ही कई आत्माओं की आंखों से जैसे आंसू बह रहे हैं और बाबा को देखकर बहुत प्यार से कह रहे हैं -'' हे भगवन्! हे भगवन्!... और जो सर्किल में खड़े थे, वह सब लोगों को दृष्टि दे रहे थे। तो बाबा ने कहा कि देखो यह ग्रुप प्रत्यक्षता ग्रुप है। और यह पब्लिक जो देख रहे हो यह सब जैसे झुंझार आंख वाले हैं। शिवबाबा आ भी गया है लेकिन झुंझार आंखों वाले देख नहीं सकते हैं, अन्धकार में पडे हुए हैं। तो जब आप शक्तियों का यह प्रत्यक्षता ग्रुप उन्हों को रोशनी देगा तो उस रोशनी से वह बाबा को देख सकेंगे।

उसके बाद बाबा ने कहा - अच्छा बच्ची और क्या सन्देश लाई हो? मैंने कहा बाबा सभी ने यादप्यार दिया है और सभी के दिल में यही है कि बस बाबा को प्रत्यक्ष करना है। वह तो आपने सीन दिखा दी। तो बाबा ने कहा कि इन सभी बच्चों में यह उमंग है कि अभी जो बाबा कहता है वह हमको कैसे भी, किसी भी हालत में, कुछ भी हो जाए लेकिन करके दिखाना है। तो यह मेरे बच्चे जो हैं वह कहने वाले नहीं हैं लेकिन करके दिखाने वाले हैं और हरेक जिम्मेवारी समझते हैं कि मुझे करना है, मुझे निमित्त बनना है। इस ग्रुप का यही दृढ़ संकल्प है। तो मैंने कहा - बाबा है तो ऐसा ही, यह जो भट्टियाँ हुई हैं उसमें सभी का यही संकल्प है कि कुछ भी हो जाये, हम दूसरों की बातों को न देख करके खुद करेंगे।

फिर बाबा ने कहा यह सभी मेरे बच्चे – ''बेगमपुर के बादशाह हैं''। इतने में क्या हुआ - एक सर्किल में राजसभा लग गई लेकिन उसमें वैकुण्ठ वाला सिंहासन नहीं था। लेकिन जैसे शुरु शुरू में लाइट के सफेद-सफेद चबूतरे देखते थे, ऐसे ही जैसे रुई के बीच रंग-बिरंगी लाइट निकल रही थी। वह रूई भी अजीब-सी थी, जैसे रुई के बीच में लाइट जलती हो, तो वह सिंहासन बहुत अच्छे लग रहे थे। उसके ऊपर सभी बैठे थे, जैसे बेगमपुर के बादशाहों की सभा है। फिर बाबा ने कहा - बच्ची, तुमने सारा सिंहासन ध्यान से देखा। उस सिंहासन में जो चार पाँव थे - उनमें लिखत थी - एक में लिखा था - **निराकारी, दूसरे में निर्विकारी, तीसरे में निरहंकारी और चौथे में था निर्विघ्न।** जैसे योगी के चार स्तम्भ (नियम) दिखाते हैं, ऐसे ही उसमें निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी और निर्विघ्न लिखा हुआ था।

तो बाबा ने कहा कि अगर बच्चों के जीवन में यह चार स्तम्भ पक्के हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं। यदि बच्चे इन चार स्तम्भ के सिहांसन को कभी न छोड़ें तो खुद भी बेगमपुर के बादशाह रहेंगे और दूसरों को भी बनायेंगे। ऐसे कहते बाबा ने कहा – मेरे बेगमपुर के बादशाहों को बहुत-बहुत यादप्यार देना। मैंने कहा बाबा यादप्यार तो दूँगी लेकिन आपने आज इन्हें सौगात कोई नहीं दी। तो बाबा ने कहा - यह सभी मेरी सौगात ही तो हैं, मैंने तो इन्हों को सारे विश्व की स्टेज पर सौगात के रूप में, शो केस में रखा हुआ है, अभी इन्हों को क्या सौगात दूँ? लेकिन तुम कहती हो तो मैं बच्चों को सौगात भी देता हूँ - बाबा ने जैसे एक-एक बच्चे को बहुत अच्छी हार्ट दी, उस हार्ट में लिखा हुआ था – ''मेरे सिकीलधे, मीठे, प्यारे विशेष बच्चे''। तो बाबा ने कहा - यह मेरे दिल की सौगात हैं जो सभी बच्चों को दे रहा हूँ। फिर कहा कि सभी बच्चों को कहना कि ब्रह्मा बाबा आपको बहुत याद करता है। ब्रह्मा बाबा कहता है – मेरे बच्चे कब आकर मेरे से मिलेंगे? जब आप बच्चे मेरे पास वतन में आओ तब तो मैं परमधाम में जाऊं, गेट खोलूं, गेट खुलने के बिना तो कोई जा ही नहीं सकता है। तो मेरे बच्चे पहले फ़रिश्ते बनें,

वतनवासी बनें तब मैं परमधाम का गेट खोलूँ। इसीलिए सभी बच्चों को कहना कि ब्रह्मा बाबा विशेष ब्राह्मण बच्चों को, महारथी बच्चों को बुला रहा है कि अभी फ़रिश्ते बनके आओ तो फिर मैं परमधाम का गेट खोलने के लिए आगे जाऊं। ऐसे बहुत रमणीक रूप रूहरिहान का था।

फिर बाबा ने कहा बच्ची एक बात सुनाऊं? मैंने कहा - बाबा सुनाओ। तो कहा आज अमृतवेले ब्रह्मा बाबा के आगे वह ग्रुप विशेष इमर्ज था जिसने बाबा की साकार में पालना ली है। उन्हें आज ब्रह्मा बाबा ने बहुत याद किया। ब्रह्मा-बाबा के नयनों में जैसे एकदम प्यार के आँसू थे, तो ब्रह्मा बाबा ने कहा– मेरे पले हुए यह बच्चे हैं, जैसे वृक्ष के पले हुए, पके हुए फल और ऐसे ही पके हुए फलों में फर्क होता है ना! तो मेरे साकार होते जिन्होंने पालना ली हुई है - बस, वही मेरे को प्रत्यक्ष करेंगे। ऐसे कहते बापदादा दोनों ही जैसे स्नेह में डूब गये। जैसे सागर उछलता है ना ऐसे प्यार का सागर जैसे बाबा के नयनों में, ह्रदय में दिखाई दे रहा था। तो कुछ टाइम तो दृश्य देखते जैसे साइलेन्स हो जाता है, ऐसे साइलेन्स हो गई। और मैं जैसे उसी स्नेह में समाते हुए, सबकी यादप्यार लेते हुए साकार वतन में आ गई। ओमशान्ति।